आई है बसंत ऋतु न्यारी

आई है बसंत ऋतु न्यारी

धानी परिधान पहने मुस्काती धरती प्यारी

फिर क्यूँ उलझाते मन को बीती दुःख स्मृतिओं में

खिल खिल हंस रहा आज पलाश

बीते पल की दुःख व्यथा भूल

कहता कल में ना कर सुख की तलाश

आज में ही हँसता है पलाश

आई है बसंत ऋतु न्यारी

भवरों ने भरी उन्मुक्त उड़ान

अपने सपनों को भी दो तुम नई उड़ान

चंचल बयार निड़र , निरन्तर बढ़ती मंजिल की ओर

अपने ड़र को आज त्याग तुम अग्रसर हो अपनी मंजिल की ओर

आई है बसंत ऋतु न्यारी

मदन की है कैसी माया

कंचन कामिनी नवयौवना पीत वस्त्र में

जैसे धरती पर फैली हो सरसों

आई है बसंत ऋतु न्यारी

माँ सरस्वती पदमासन पर आरूढ़

सुर कला और ज्ञान की देवी बाँट रही अमृत सबको

भर लो अपना आँचल तुम इस ज्ञान ज्योति से

मिटे तुम्हारे जीवन में अज्ञान, इर्षा और भेदभाव के भाव सबसे

आई है बसंत ऋतु न्यारी

धरती अपने भाल पर केसर तिलक लगाती

हँस भी देखो मोती चुगते , नाच रहे बन -बन मोर

खिलखिला रहीं तितलियाँ चहुँ ओर

तुम भी रंग लो खुद को मौसम के इस रंग

हँसों खिलखिलाओ बन तितली ,पवन ,भवर, पलाश से आज

आई है बसंत ऋतु न्यारी